श्रीराधाअष्टमी पर मन्दिर में गाई ज़ाने वाली

श्रीराधा की जन्म-बधाईयाँ

(व्याख्या सहित)

प्रकाशक :

वेणु प्रकाशन

बड़वाला मौहल्ला, वृन्दावन

प्रकाशक :

वेणु प्रकाशन

बड़वाला मौहल्ला, वृन्दावन

द्वितीय संस्करण :

श्रीराधा अष्टमी १६-९-९१

दो रुपया पिचहत्तर पैसे

मुद्रक :

श्रीहरिदास प्रिंटिंग प्रेस, विहारीपुरा

वृन्दावन–281121

आमुख

श्रीराधाबल्लभलालजी के स्वरूप और श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय के संस्थापक महाप्रभु श्रीहित हरिवंश गोस्वामी का प्रादुर्भाव लगभग पौने पाँच सौ वर्ष पूर्व मथुरा मण्डल के 'बाद' नामक ग्राम में वैशाख शुक्ला एकादशी सोमवार को हुआ था। यह ग्राम मथुरा-आगरा रोड पर मथुरा से लगभग ६ मील की दूरी पर स्थित है। इनके पिता का नाम व्यास मिश्र जी तथा माता का नाम श्रीताराराानी था। व्यास मिश्र जी दिल्ली के तत्कालीन बादशाह के राज ज्योतिषी थे। महाप्रभु के प्रादुर्भाव के समय वे बादशाह के साथ दिल्ली से आगरा सपत्नीक जा रहे थे, और प्रसवकाल निकट देखकर वे बादग्राम में ठहर गये थे। प्रसव के थोड़े दिन बाद वे अपने अत्यन्त तेजस्वी बालक को लेकर अपने पैतृक निवास स्थल देवबन (जिला सहारनपुर) को वापिस चले गये।

महाप्रभु का लालन-पालन एवं संवर्द्धन देवबन में ही हुआ। महाप्रभु के चरित्रकारों ने उनकी अनेक भक्ति भाव पूर्ण अलौकिक बाल लीलाओं का वर्णन किया हैं जिनको विस्तारभय से यहाँ देना सम्भव नहीं है। महाप्रभु देववन में अपनी ३१ वर्ष की आयु तक रहे और वहाँ उनके तीन पुत्र तथा एक कन्या उत्पन्न हुई। श्रीराधा ने वहीं उनको मन्त्र प्रदान किया था जो निजमन्त्र कहलाता है। देवबन में उन्होंने अपने निवास स्थल के निकट एक कूए में से एक भगवद् विग्रह का उद्धार करके उसे राधारंगीलालजी के नाम से अपने निवास स्थान में स्थापित किया और जब तक वे देवबन में विराजे तब तक इस स्वरूप की अत्यन्त प्रीति पूर्वक सेवा—परिचर्या करते रहे।

उनकी आयु के ३२ वें वर्ष के आरम्भ में श्रीराधा ने उनको आज्ञा दी कि अब श्रीवृन्दावन जाकर वहाँ के लुप्त लीला स्थलों को प्रकट करो और अपने धर्म की स्थापना करके कलिकाल के संतप्त जीवों को शाश्वत सुख शान्ति का मार्ग दिखाओ। श्रीराधा की आज्ञा पाकर महाप्रभुजी संवत् १५९१ में श्रीवृन्दावन पधारे। देवबन से आते हुए मार्गमें चिड़थावल नामक

ग्राम से उन्होंने, श्रीराधा के निर्देशन के अनुसार, आत्माराम नामक ए ब्राह्मण के घर से एक स्वयं प्रकट भगवद्‌स्वरूप प्राप्त किया और उसे श्री वृन्दावन लाकर कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को श्रीराधावल्लभलाल के नामसे स्थापित किया तथा अपनी पाँच भोग सात आरती वाली सेवा पद्धति का प्रवर्तन किया। हित महाप्रभु द्वारा स्थापित भक्ति सम्प्रदाय भी इस स्वरूप के श्रीराधावल्लभ नाम को लेकर संसार में प्रचलित हुई।

श्रीराधावल्लभलाल का स्वरूप महाप्रभुजी को अकेला ही मिला था। उन्होंने इस स्वयं व्यक्त स्वरूप के साथ अपनी सर्वस्व श्रीराधा की किसी मनुष्य-निर्मित मूर्ति को स्थापित करना उचित नहीं समझा और श्रीराधा वल्लभलाल के वाम भाग में एक गादी का निर्माण करके उसमें श्रीराधा नाम स्थापित कर दिया। श्रीवृन्दावन के प्रसिद्ध श्रीबाँकेविहारी जी एवं श्रीराधारमणजी के मन्दिरों में भी श्रीश्यामसुन्दर के वाम भाग में श्रीराधा की गादियाँ ही स्थापित हैं। वैष्णव सिद्धान्त में भगवान के नाम और रूप में किसी तरह का भेद नहीं माना जाता और इस प्रकार श्रीराधानाम और श्रीराधारूप एक ही हैं। महाप्रभुजी से आरम्भ करके उनके सभी कृपापात्र रसिक सन्त श्रीराधा की गादी में ही श्रीराधारूप के दर्शन करते आये हैं। हम ऊपर कह चुके हैं कि श्रीराधा हिताचार्य की गुरु थीं अत: श्रीराधा की गादी को गुरुगादी भी माना जाता रहा है।

महाप्रभुजी के प्रादुर्भाव के समय उत्तर भारत के बहुत बड़े भाग पर दिल्ली के सुलतानों का अधिकार था जो अत्यन्त धर्मान्ध और कट्टरपंथी थे। उन्होंने हिन्दुओं के अनेक प्राचीन देवमन्दिर नष्ट कर दिये थे और नये मन्दिरों का निर्माण नहीं होने देते थे। अतः महाप्रभुजी के जीवन काल में श्रीराधावल्लभजी का कोई मन्दिर नहीं बन सका और वे लताभवन में ही विराजमान रहे। महाप्रभुजी के अन्तर्धान के कुछ वर्ष बाद दिल्ली में मुगल बादशाह अकबर का धर्म-सहिष्णु राज्य काल आरम्भ हुआ। अकबर ने अपने बड़े-बड़े हिन्दू मनसबदारों को मन्दिर बनाने की आज्ञा दे दी और बृन्दावन में मन्दिरों का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया। अकबर के एक मनसबदार रहीमखानखाना के कोषाध्यक्ष सुन्दरदासजी कायस्थ महाप्रभुजी के तृतीय पुत्र गोस्वामी गोपीनाथजी के शिष्य थे। उन्होंने सम्बत् १६४१ में श्रीराधावल्लभजी का लाल पत्थर का एक विशाल मन्दिर बनवाया जो नये मन्दिर के बगल में स्थित है।

श्रीराधावल्लभलालजी उस मन्दिरमें लगभग १०० वर्ष ही विराजमान रह सके। विक्रम की १८वीं शती के आरम्भ में मुगल बादशाह औरंगजेब ने उक्त मन्दिर एवं श्रीवृन्दावन के अन्य मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट करा दिया और श्रीराधावल्लभजी के स्वरूप को ब्रजमण्डल के कामवन नामक ग्राम में सम्वत् १७३९ में प्रतिष्ठित किया गया। श्रीराधावल्लभलालजी वहाँ १०३ वर्ष विराजे और सम्वत् १८४२ में वे अपने नये मन्दिरमें आकर विराजमान हो गये। वर्तमान नया मन्दिर भड़ौंच (गुजरात) के सेठ लल्लूभाईशाह ने बनवाया था।

हित महाप्रभु ने अपने सम्प्रदाय में श्रीराधा की प्रधानता सहित युगल श्रीश्यामाश्याम की उपासना का प्रचलन किया। उनके जीवनकाल में ब्रज प्रदेश में दो अन्य युगल उपासक सम्प्रदायों की स्थापना हुई थी जिनमें श्रीकृष्ण की प्रधानता स्वीकार की गई है। उक्त दोनों सम्प्रदाय भी युगल उपासक हैं और इनमें भी श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय की भाँति श्रीराधाकृष्ण को रस स्वरूप माना जाता है। किन्तु श्रीराधा की प्रधानता मानने के कारण श्रीराधावल्लभ किंवा हित सम्प्रदाय की रस-पद्धति और उपासना का विकास उक्त सम्प्रदायों की उपासना एवं रस सिद्धान्त से भिन्न प्रकारों में हुआ है। इस प्रधानता को लेकर ही श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय में श्रीराधा जन्मोत्सव श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की अपेक्षा अधिक धमधाम एवं लाड़-चावके साथ मनाया जाता है। श्रीहित महाप्रभु ने श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा दोनों के जन्म की बधाईयाँ गायी हैं और दोनों बधाईयाँ अत्यन्त सुन्दर हैं किन्तु श्रीराधा की बधाई में वे सब प्रेमीजनों से वृषभान गोप के द्वार पर चलने का आग्रह करते दिखलाई देते हैं—चलौ वृषभान गोप के द्वार, और बधाई के अन्त में एकत्रित भक्त समुदाय के ऊपर हल्दी मिश्रित दूध-दही छिड़कते हुए दिखलाई देते हैं—जय श्रीहित हरिवंश दुग्ध दधि छिरकत मध्य हरिद्रा गार। भक्ति साहित्य में श्रीराधा जन्म की ये प्रथम बधाई मानी जाती है।

श्रीराधावल्लभजी के मन्दिर में श्रीराधा की जन्म बधाइयों का गान भाद्र कृष्णा त्रयोदशी की रात्रि से प्रारम्भ हो जाता है और १५ दिन तक होता रहता है। इनमें से भाद्र शुक्ला सप्तमी और अष्टमी को गाई जानें वाली बधाइयों को अर्थ सहित नीचे उद्धृत किया जा रहा है—

(श्रीहिताचार्य की यह बधाई अन्य बधाईयाँ गाने से पूर्व नित्यप्रति गायी जाती है।)

चलौ वृषभान गोप के द्वार ।
जन्म लियौ मोहन हित श्यामा, आनन्द-निधि सुकुमार ॥१॥
गावत जुवति मुदित मिलि मंगल, उच्च मधुर धुनि धार ॥२॥
विविध कुसुम कोमल किसलय दल, सोभित बन्दन बार ॥३॥
विदित वेद-विधि विहित विप्रवर, कर स्वस्तिनु उच्चार ॥४॥
मृदुल मृदंग मुरज भेरी डफ, दिवि दुंदुभि रवकार ॥५॥
मागध सूत बन्दी चारन जस, कहत पुकारि पुकारि ॥६॥
हाटक हीर चीर पाटम्बर, देत सम्हारि–सम्हारि ॥७॥
चन्दन सकल धेनु–तन मण्डित चले जु ग्वार सिंगारि ॥८॥
(जैश्री)हित हरिवंश दुग्ध-दधि छिरकत, मध्य हरिद्रागारि ॥९॥

व्याख्या–वृषभानु गोप के द्वार पर चलो जहाँ सुकुमार आनन्द निधि स्वरूपा श्रीश्यामा ने मोहन के हित के लिए जन्म लिया है ॥१॥ जहाँ मुदित ब्रज युवतियाँ मिलकर उच्च और मधुर ध्वनि में धारा प्रवाह मंगल गान कर रही हैं ॥२॥ जहाँ नाना प्रकार के पुष्प एवं कोमल नवीन पत्रों से बनी हुई बन्दनवार शोभित हो रही है ॥३॥ जहाँ श्रेष्ठ ब्राह्मणगण वेद विधि से अनुमोदित आशीर्वादात्मक मन्त्रों का उच्चारण कर रहे हैं॥४॥ जहाँ मृदंग, मुरज, भेरी और डफ मृदुल रीति से बज रहे हैं और जहाँ आकाश में दुंदुभी का शब्द हो रहा है ॥५॥ जहाँ मागध, सूत, बन्दी और चारण उच्च स्वर से यश-वर्णन कर रहे हैं ॥६॥ जहाँ वृषभानु राय सबको सँभला-सँभला कर मुहरें, हीरे और रेशमी वस्त्र प्रदान कर रहे हैं॥७॥ जहां गोपगण सब गायों के शरीर पर चन्दन चर्चित करके चले आ रहे हैं॥८॥ जहाँ श्रीहित हरिवंश चन्द्र दूध-दही में हल्दी डालकर सब लोगों के ऊपर छिड़क रहे हैं ॥९॥

निम्नलिखित पद सप्तमी की रात्रि को शयन आरती से पूर्व मन्दिर के चौक में बैठकर गाया जाता है ।

नमो-नमो पावनकरन हित अनन्य हरिवंश ।
जुगल ध्यान गुन गान करि हरी सूल जिय संश ॥१॥
बरनौं चाहत कछुक अब श्रीराधा परिवार ।
देहु बुद्धि हित रूप कौ श्रीहरिवंश उदार ॥२॥

आगम आदि पुरान मथि बाँचि साँचि उर धारि ।
वंश कहौं वृषभान कौ ताही मत अनुसार ।।३।।

चौतुका—ढ़ाँढ़िया वृषभानुराइ कौ कुंवरि जनम सुनि आयौ हो ।
सभा विराजत सिंध पौरि सब्र गोपन कौं सिर नायौ हो ।।
महीभान सुखभान जू रतन भान मन भायौ हो ।
श्रीवृषभान बहुत कछु दीनौ ढ़ाँढ़ी निकट बुलायौ हो ।।१।।

दोहा—वंश कह्यौ वृषभानु कौ कछु संक्षेप बताइ ।
अब कीरति के पिता कौ कहौं सुजस समुझाइ ।।४।।

चौतुका—इन्दुसैन की मुखरा रानी ताकौ सुजस सुनाऊँजी ।
तिनकी सुता भई कीरतिदा गुन गन कहत लज्याऊँगी ।।
अष्ट सिद्धि नवनिधि जाके पाँइन लागी नैकु न सोहैंजी ।
कोटि-कोटि रति सची उमा-सी इन्हैं गनै तहाँ कोहैंजी ।।२।।

दोहा—भवन नृपति वृषभान के कीरति जू कौ राज ।
अष्ट सिद्धि नवनिधि तहाँ सेवत लियें समाज ।।५

चौतुका—महाराज वृषभान राइ जू कीरति जी वर पाये जू ।
प्रथमहीं सुभग सुघर सुंदर अति श्रीदामा सुत जाये जू ।।
साधु सुभट बड़ सील चतुरवर सखा कृष्ण कौ प्यारौ जू ।
ताके जनम दान बहु पायौ भवन-भवन तें न्यारौ जू ।।३।।

दोहा—सहस्त्र गोप कौ जूथ जूथपति एक जु ताकौ ।
जूथ संग सत रहैं नाम जूथेश्वर ताकौ ।।
पसु चारक जूथेस जस श्री दामा सम नाहिं ।
मधि नायक श्रीकृष्ण सँग चलत दियैं गलबाँह ।।१।।

चौतुका—अब प्रगटी श्रीकुंवरि लाड़िली सुन्दरता की अैना जू ।
नख सिख आनंद पुंज अंग-अंग अमृत श्रवत मुख बैना जू ।
जिहि रसपान करत मन मोहन अविनासी पद पायौ जू ।
जाकौ रूप निहारि हार हरि और न कछू सुहायौ जू ।।४।।

दोहा—रूपसिंधु गुन अवधि सुनि वचनामृत रसखान ।
जोग-जग्य-तप-दान ब्रत ये नहि नाम समान ॥३॥

चौतुका—कोटि-कोटि कर जोरैं सनमुख रूप निहारैं जू ।
निरखि-निरखि मुख प्रान प्रिया कौ तन मन सर्वसु वारैं जू ॥
पूरन पुरुष पुरान भयौ पुरुषोत्तम नाम कहायौ जू ।
श्रीराधा-राधा नाम रटत ही नव किशोर पद पायौ जू ॥५॥

दोहा—नित्य सुद्ध अह्लादिनी सक्ति अनंत अपार ।
नन्द नन्दन हित जन्म लै प्रगट भईं सुकुंवार ॥६॥

चौतुका—भोर भई वृषभानु भवन में नाँचत नारि सुहाई जू ।
गावत ग्वाल सबै दै हेरी मंगल मोद बधाई जू ॥
श्रीवृषभानुराइ बड़भागी दान देत नहीं हारे जू ।
चार लक्ष दईं धेनु द्विजन कौं औरन लहर विडारे जू ॥७॥

दोहा—चार लाख विप्रन दईं गाइ सिंगार सिंगार ।
और द्वार माँगन गये तिन दिये लहर बिडार ॥८॥

चौतुका—ढाँढिहि दियौ हार मुक्ता कौ कुँवरि जनम जस गायौंजी ।
जुगल नाम कौ बागौ दै हित रूपलाल पहिरायौ जी ॥९॥

(इसमें वृषभानराय का ढ़ाँढ़ी (यशगायक) उनका वंश वर्णन करने के पश्चात् श्रीराधा के अद्भुत स्वरूप का वर्णन करता है और श्रीराधा के जन्म से उत्पन्न अपने हृदय-उल्लास को प्रकट करता है इस पद में गोस्वामी श्री रूपलालजी महाराज कहते हैं—) मैं सर्वप्रथम प्रेममार्ग के अनन्य उपासक परम पावन श्रीहरिवंश को नमस्कार करता हूँ जिन्होंने युगल श्रीश्यामा श्याम का गुणगान करके संसार के जीवों के हृदय में रही हुई पीड़ा और संदेहों को दूर कर दिया। मैं अब श्रीराधा के परिवार का वर्णन करना चाहता हूँ और मेरी श्रीहरिवंशचन्द्र से प्रार्थना है कि वे मुझे बुद्धि प्रदान करें। मैं आगम और पुराणों के आधार पर यह वर्णन कर रहा हूँ।

श्रीराधा के प्रादुर्भाव के पश्चात् वृषभानजी अपने भ्राताओं, महीभान सुखभान और रतनभान तथा अनेक गोप सरदारों के साथ द्वार पर जब

बैठे हुए थे उस समय उनके ढ़ाँढ़ी ने आकर सबको नमस्कार किया। वृष-भानजी ने ढ़ाँढ़ी को निकट बुलाकर बहुत-सा दान दिया। ढ़ाढ़ो ने प्रसन्न होकर श्रीराधा की माता कीरतिजी के पिता का सुयशगान आरम्भ किया। उसने बताया कि इन्द्रसेन गोप की मुखरा नामक पत्नी से श्रीकीरतिजी उत्पन्न हुई हैं। कीरतिजी के चरणों में कोटि-कोटि रति, इन्द्राणी, भवानी अष्टसिद्धियाँ, नवनिधियाँ लोटती रहती हैं। वृषभानजी के भवन में कीरति जी का राज्य है। कीरतिजी की प्रथम सन्तान श्रीदामा जी हुए जो श्रीकृष्ण के अत्यन्त प्रिय सखा हैं। उनके जन्म के समय मुझे बहुत से अलौकिक दान मिले थे। श्रीदामा जी एक हजार गोपों के यूथपति हैं और उनके मध्य में वे और श्रीकृष्ण गलबहियाँ देकर चलते हैं।

अब कीरतिजी की द्वितीय सन्तान कुँवरि राधिका लाड़ली का प्रादु-र्भाव हुआ है जो सुन्दरता का एक मात्र स्थान हैं और जिनसे नख से शिखा पर्यन्त संपूर्ण अङ्ग आनन्द के पुञ्ज हैं। जिनके वचनों से अमृतरस प्रवाहित होता है और जिनका स्वरूप देखने के पश्चात् श्रीहरि को और कुछ अच्छा नहीं लगता। श्रीराधा रूप की सिन्धु और गुण की सीमा हैं तथा योग, यज्ञ तप, दान, व्रत, आदि उनके नाम की समानता नहीं करते अर्थात् श्रीराधा नाम इन सबसे अधिक प्रभावशाली है। कोटि-कोटि लक्ष्मी हाथ जोड़कर श्रीराधा का रूप सौन्दर्य देखती रहती हैं और अपना सर्वस्व उनके ऊपर न्यौछावर करती रहती हैं। ढ़ाँढ़ी ने बताया कि पुराणों में जो पूर्ण पुरुषका वर्णन है और जो पुरुषोत्तम कहलाता है उसने राधानाम का निरन्तर जाप करके ही अपना नवकिशोर पद प्राप्त किया है। श्रीराधा का प्रादुर्भाव श्री-नन्द नन्दन की प्रसन्नता के लिए हुआ है।

अब श्रीरूपलालजी महाराज वृषभानजी के द्वार पर हो रहे उत्सव का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वहाँ गोप स्त्रियाँ सुन्दर नृत्य कर रही हैं और गोपगण 'हेरी' देकर बधाई गा रहे हैं। श्रीवृषभानजी उनको तथा ब्राह्मणों को दान देते हुए थक नहीं रहे हैं। उन्होंने राधाकुँवरि का यशगान करने वाले ढ़ाँढ़ी को बहुमूल्य मोतियों का हार दिया और मुझको युगल नाम का जामा पहनाकर धन्य किया।

(निम्नलिखित पद शयन आरती के बाद ऊपर जगमोहन में श्रीराधावल्लभजी के खड़े होकर श्रीजी के सन्मुख गाये जाते हैं।

मन्दिर में केवल जन्मदिन से पूर्व की सप्तमी को शयन आरती के बाद श्रीजी के दर्शन खोले जाते हैं)।

(बधाईयों से पूर्व निम्नलिखित ५ दोहे गाये जाते हैं जिनमें से चार ध्रुवदासजी के हैं और एक वंशीअलिजी का है।)

प्रथम नाम हरिवंश हित, रट रसना दिन रैन।
प्रीति रीति तब पाईये, अरु वृन्दावन ऐन ॥१॥

चरन शरन हरिवंश की, जब लगि आयौ नाहिं।
नव निकुंज निज माधुरी क्यों, परसै मन माहिं ॥२॥

सर्वोपरि राधा कुंवरि, पिय प्रानन के प्रान।
ललितादिक सेवत तिनहिं, अति प्रबीन रस जान ॥३॥

छकन छके जे राधिका, तिन्हें न और सुहाय।
रसना चाखि अँगूर फल, कहा निबौरी खाय ॥४॥

श्रीराधावल्लभ लाल की, विमल धुजा फहरन्त।
भगवत धर्महुं जीत कै; निज प्रेमा ठहरन्त ॥५॥

श्रीध्रुवदासजी कहते हैं कि उपासक को सर्वप्रथम श्रीहित हरिवंश नाम का जाप दिन-रात करना चाहिए तभी उसको प्रीति की रीति का ज्ञान होता है और श्रीवृन्दावनवास मिलता है। (१) जब तक मनुष्य श्रीहरिवंश की शरण प्राप्त नहीं करता तब तक नव निकुंज की सहज माधुरी का स्पर्श उसके हृदय में नहीं होता है।(२) अपने प्रियतम के प्राणों की प्राण श्रीराधा कुँवरि सर्वोपरि विराजमान हैं। उनको रसक्रीड़ा में अत्यन्त निपुण समझ-कर ही ललितादिक सहचरीगण उनकी सेवा करती रहती हैं। (३)

श्रीवंशीअलिजी कहते हैं कि जो उपासक श्रीराधिका रस में छक गये हैं उनको और कोइ रस अच्छा नहीं लगता है। अंगूर चाखने के बाद कोई नीम का फल निमोली नहीं खाता। (४) पुन: श्रीध्रुवदासजी कहते हैं कि श्रीराधावल्लभलाल की निर्मल ध्वजा सर्वोपरि फहरा रही है क्योंकि उन्होंने भागवत् धर्मों के भी ऊपर अपने प्रेम धर्म को स्थान दिया है ॥५॥

(इन तीनों बधाइयों में ढ़ाढ़ी श्रीवृषभानजी का वंश वर्णन करता हुआ उनकी, श्रीराधाकुंवरि की कृपा याचना करता है।)

पद–जदुवंशी जजमान तिहारौ ढ़ाँढ़िया हो ।
कुंवरि जनम सुनि कैं हौं आयौ राख हमारौ मान ।।तिहारौ०।टेक

एक बार हौं पहिलैं आयौ कहन बधाई ताकी ।
नन्दी स्वर ब्रजराज घरनि घर कूख सिरानी जाकी ।।
अब तौ मेरे मन कौ भायौ दोऊ नेग चुकावौ ।
नँदरानी कीरतिदा रानी ढ़ाढ़िन कौं पहिरावौ ।।
बहुत भाँति ढ़ाढी पहिरायौ गोपराज बड़ दानी ।
किशोरीदास कौं निर्भय करि कैं ब्रज राख्यौ ब्रजरानी ।।

यदुवंश के हे यजमान, मैं आपका ढ़ाढ़ी हूँ। श्रीराधाकुँवरि के प्रादुर्भाव की सूचना मिलने पर आया हूँ, आप मेरा सम्मान करें। इस व्रज प्रदेश में मैं एक बार पहले भी बधाई गान करने आया था जब नन्दगाँव के ब्रजराज की पत्नी यशोदाजी की कोख शीतल हुयी थी। इस बार तो मेरे मन की अभिलाषा ही पूर्ण हो गई है। अतः नन्द रानी और कीरति रानी दोनों मिलकर ढ़ाढ़ी को वस्त्राभूषण पहनाओ। दोनों ने ढ़ाढ़ी को अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण दिये और किशोरीदासजी कहते हैं कि ब्रजरानियों ने मुझको सब प्रकार से निर्भय करके व्रज में बसा लिया।

पद–हौं ब्रजवासिन कौ मगा ।

बल्लव राज गोप कुल मंडन इन द्वै घर कौ जगा ।।
नन्दराइ इक दियौ पिछौरा तामें कनक तगा ।
श्रीवृषभान दियौ इक टोडर कंचन जटित नगा ।।
कीरति दई कुंवरि की झँगुली जसुमति अपने सुत कौ झगा ।
किशोरीदास कौं लै पहिरायौ नील-पीत कौ पगा ।।

अर्थ—श्रीकिशोरीदास जी कहते हैं कि मैं ब्रजवासियों का भिखारी हूँ। मैं नन्द और वृषभान दो घरों का यशगायक हूँ। नन्दराय ने मुझको सोने के धागों से बना हुआ एक वस्त्र ओढ़नेके लिए दिया और श्रीवृषमान

ने नगजटित सुवर्णका एक टोडर (आभूषण) दिया। कीरतिने मुझे श्रीरा
कुँवरि की झँगुली और यशोदाजी ने अपने पुत्र का झबला दिया। श्री
किशोरीदासजी कहते हैं कि मुझको नील-पीत (श्रीराधा और श्रीश्या
सुन्दर) के रंग की पाग पहनने के लिए दी।

पद—रानी माँगनौ हौं आयौ।

कीरति जू की कुंवरि राधिका ताकौ सद का पायौ ॥टेक॥
पुरुष जाति बहु दान मान देइ तिन तन नैंकु न हेरौं।
बेसर वलय महावर मंडित इनकौं अलप न फेरौं॥
राज सिंघासन हेम अरु हाथी लैंउ न नर कर ओट।
अँगिया डँड़िया लहँगा मुंदरी इनकौ मेरैं कोट ॥१॥
महाराज ब्रजराज नन्द वृषभान बड़े अतिदाता।
सुबल सुबाहु श्रीदामा अर्जुन कृष्ण तोक बल भ्राता॥
इनकौ देत कबहूं नहिं लैहौं गोधन धन जु अपारा।
रानी दियौ सबै कछु लैहौं दुलरी मुक्तन हारा ॥२॥
वरेयसी श्रीब्रजराज की माता सुख सागर की करनी।
श्रीवृषभान नृपति की जननी सुखदा सबसुख ढ़रनी॥
पटुला श्रीजसुमति की मैया मुखरा कीरति जननी।
रोहनी श्रीबलराम प्रगट भये ये बड़भागिन गननी ॥३॥
रमा आदि दै और त्रियन पै हौं कबहूं नहिं जाचौं।
ब्रज बनिता जाचक अभिमानी ह्वै निसंक ह्वै नाँचौं॥
सखी सहेली और सहचरी इनके गुन हौं साँचौं।
जिनकैं कीरति कुंवरि पियारी तिनके दानहि राँचौं ॥४॥
बरसाने वृषभान गोप की कीरतिदा सुभ नारी।
ताकी कूख मुकट मणि राधा वंदत चरन विहारी॥
जोग जज्ञ तीरथ व्रत संजम इनकौं नैंकु न साधौं।

दुर्लभ सुलभ वास वृन्दावन राधा पद आराधौं ॥५॥
बरस गाँठ दिन जनम बधाई श्री राधा की होई ।
सदका दियौ वृन्दावन रानी औरु न जाचौं कोई ॥
आदर करि कें निकट बुलायौ मन में इच्छा सोई ।
रानी मगा अनन्य जानि कें कृपा दृष्टि भरि जोई ॥६॥
ललित विशाखा चंपक चित्रा इनही के गुन गैहौं ।
इन्दु लेखा तुंग विद्या रँग देवी सुदेवी आदि सुख पैहौं ॥
बड़ी दानि पूरन वृन्दा जू इनतें सब सुख लैहौं ।
यह परिकर वृषभान लली कौ ताकौं माथौ नैहौं ॥७॥
संग्रह करौं न जाचौं कबहूं तुव पद-धन निज पाऊँ ।
सीस नाइ कें दीन न भाखों ललित लली गुन गाऊँ ॥
यह ब्रत कौं तुमहीं निरवाहौ और कछू नहिं आसा ।
दीजै कछु इक टहल आपनी रास-बिलास निवासा ॥८॥
हौं अति पामर कृपा दृष्टि बल और कछू नहिं जानी ।
वृन्दाविपिन वास देहु रानी निरभै करि मनमानी ॥
किशोरीदास के नाम धरे की लाज राख बड़दानी ।
ब्रज बनिता तजि और न जांचों हौं जाचक अभिमानी ॥९॥

अर्थ—ढ़ाँढ़ी कीरतिजी से कहता है कि हे रानी, मैं आपका भिखारी
आ गया हूँ । आपकी कुँवरि राधिकाका दान (कृपादान) मुझको मिला है ।
पुरुष जाति मुझको कितना भी दान-मान दे लेकिन मैं उनकी तरफ तनिक
भी नहीं देखता किन्तु जो वेसर, कंकण और महावर से सुशोभित हैं उनका
दान मैं कभी नहीं वापिस करता । पुरुष जाति से मैं हाथी और राजसिंहा-
सन का भी दान नहीं लेता किन्तु मेरे घर में अँगिया (चोली) साड़ी, लहँगा,
अँगूठी आदिके ढेर लगे हुये हैं। ब्रजराजनन्द और वृषभान अत्यन्त बड़े दाता
हैं। सुबल, सुबाहु, श्रीदामा, अर्जुन कृष्ण तोक, वलराम आदि भी वैसे ही हैं।
इन लोगों का दिया हुआ अपार गोधन तथा अन्य धन मैं कभी नहीं लेता

किन्तु रानी का दिया हुआ दोलड़ मोतियों का हार मैं प्रसन्नता पूर्वक लेता हूँ।

ब्रजराज श्रीनन्दराय की माता वरेयसी ने उनको जन्म देकर सु सागर प्रवाहित किया। श्रीवृषभान राय की जननी सुखदा ने भी सम्पूर्ण सु प्रदान किये। इसी प्रकार श्रीयशोदाजी की माँ पटुला, कीरतिजी की जन मुखरा और बलरामजी की माता रोहिणीजी को भी भाग्यशाली मान चाहिए। लक्ष्मी आदि अन्य स्त्रियों से भी मैं कभी कुछ नहीं माँगता। ब्रजवनिताओं का अभिमानी याचक हूँ और उनके आगे निर्भय होकर नृ करता हूँ। सखी सहेली और सहचरियों के गुणों का मैं संग्रह करता हूँ त जिनको कीरति कुंवरि श्रीराधा प्रिय हैं उनसे ही दान लेकर मुझको प्रसन्न होती है। बरसाने के वृषभान गोप को कीरतिरानी की कूखसे वे मुकुटम श्रीराधा प्रकट हुई हैं जिनके चरणों का वन्दन बिहारीलाल करते रहते है योग, यज्ञ, तीर्थ-भ्रमण, व्रत, संयम आदि की साधना मैं बिलकुल न करता। मुझको तो अत्यन्त दुर्लभ श्रीवृन्दावनवास सुलभ हो गया है ज रहकर मैं श्रीराधा के चरणकमलों की आराधना करता रहता हूँ। व श्रीराधा की वर्षगाँठ के दिन श्रीराधा की जन्म बधाई का गान होता है श्रीवृन्दावनरानी ने मुझको दान दिया है और अब मैं किसी से अन्य कु नहीं माँगता। कीरति रानी ने मुझ भिखारी को अनन्य जानकर मेरी ओ कृपादृष्टि भरकर देखा।

मगा (भिखारी) ने आगे कहा कि मैं ललिता, विशाखा, चंपकलत चित्रा, इन्दुलेखा, तुंगविद्या, रंगदेवी और सुदेवीका भी गुणगान करूँगा अ इन्हीं से सुख प्राप्त करूँगा। श्रीवृन्दाजी (श्रीवृन्दावन) पूर्णदानी हैं। इन् से मैं सुख प्राप्त करूँगा। श्रीवृषभाननन्दिनी का यह परिकर है और इसी आगे मैं अपना मस्तक झुकाऊँगा। मैं न किसी से कुछ माँगता हूँ और संग्रह करता हूँ। मैं तो आपके चरणकमलरूपी धन को प्राप्त करने क इच्छुक हूँ। मैं मस्तक झुकाकर किसी से दीनता पूर्वक नहीं बोलता औ ललित लली श्रीराधा का गुणगान करता रहता हूँ। मेरे इस अनन्य व्रत क तुम ही निर्वाह करने वाली हो और मुझे अन्य किसी वस्तु की अभिला नहीं है। मैं तो केवल यह चाहता हूँ कि मुझको कुछ आपकी सेवा-टहल मि जाये और श्री श्यामाश्याम के रास-विलास में मेरी स्थिति हो जाये। अत्यन्त पामर हूँ और आपकी कृपा दृष्टि के बल से मैं अन्य कोई बात नह जानता। मैं यही माँगता हूँ कि आप मुझे संसार की ओर से निर्भय बनाक

वृन्दाविपिन का वास दें। श्रीगुरु ने मेरा नाम किशोरीदास रखा है और हे बड़दानी, आपको इसकी लज्जा रखनी है क्योंकि मैं बड़ा अभिमानी याचक हूँ और व्रज बनिताओं को छोड़कर अन्य किसी से कुछ नहीं माँगता।

निम्नलिखित पद अष्टमी के दिन प्रातःकाल मंगला आरती से पूर्व गाया जाता है। इसमें कीरत रानी के दस मास के गर्भ वर्णन के साथ प्रसव के समय आयी हुई दाई (गुजराती-दायण) के रूप-गुणों का वर्णन है—

पद—प्रथम मास जब लाग्यौ। हियौ अनुराग्यौ।
भाग्य बड़ जाग्यौ। अमंगल भाग्यौ॥
अहो ऊग्यौ है बिरवा प्रेम मुदित रानी भई॥१॥
दुतिय मास जब आयौ। कह्यौ वचन सुहायौ॥
सखी सौं जनायौ। परम सुख पायौ।
अहो गति-मति तौ भई और कहत नहीं आवही॥२॥
तृतीय मास गोपरानी। परम सुख सानी॥
कहत मृदु बानी। लली उर आनी॥
अहो लक्षन देख अभूत परम हर्षित भई॥३॥
चौथे मास मन फूल्यौ। भाग्य अनुकूल्यौ॥
महा रस झूल्यौ। सकल दुःख भूल्यौ॥
अहो गोप राज कुल वधू परम सोभित भई॥४॥
पँचयौ मास जब आन्यौ। देखि कुटुम्ब सिहान्यौ॥
नगर जब जान्यौ। मोद मन मान्यौ॥
अहो फूलीं सकल सवासि अंचल लै असीस दै॥५॥
छठेमास छवि बाढ़ी। अंग अंग आढ़ी॥
कंचुकी भई गाढ़ी। भवन मधि ठाढ़ी॥
अहो आलस कछुक जनायौ धरत पग डगमगे॥६॥

सातये मास सहेली । नहीं तजत अकेली ॥
कहत सुनौं हेली । रहौ संग भेली ॥
अहो भाँति-भाँति समुझाइ गर्भ रक्षा करी ॥७॥

आठये मास द्विज आये । बोलि पठाये ॥
न्यौंत जिमाये । सजन पहिराये ॥
अहो बोले सजन सों बोल सोई प्रभु कीजिए ॥८॥

नवयें मास गोप वाला । कहैं बचन रसाला ॥
अजू कीरति कृपाला । बूझत इहि काला ॥
अहो कब ह्वै है वह द्यौस सु मंगल गाइ हैं ॥६॥

पूजे हैं दसयौ मासा । उर बढ़यौ है हुलासा ॥
सफल भई सब आसा । कियौ भवन प्रकासा ॥
अहो तिहि छिन दाई बुलाई तौ कूख सिराईयौ ॥१०॥

दाई लली की उजागर । रूप की आगर ॥
सब गुन नागर । प्रेम कौ सागर ॥
अहो देखि त्रिया भईं थकित कहाँ लौं बखानिये ॥११॥

भान घरनि भई धन्या । जनी जब कन्या ॥
न तिहि सम अन्या । सेस शिव मन्या ॥
अहो लोकन बजे हैं सदाने लली जब औतरी ॥१२॥

भान अथाई तें टेरे । आये जब नेरे ॥
कुंवरि तन हेरे । भूले देख उजेरे ॥
अहो आनंदे पुरवासी भीर रावर भई ॥१३॥

नारिनु मंगल गाये । सु सथिये धराये ॥
वितान तनाये । कदलि रूपवाये ॥
अहो धुजा कलश धरि धाम सु चौक पुराइयौ ॥१४॥

विप्रन वेद उचारे। नक्षत्र विचारे ॥
सुभ गुन विस्तारे। धनि सुदिन तिहारे ॥
अहो भवन चतुर्दस सेव्य सु तुम गृह आइयौ ॥१५॥

सुनि-सुनि कीरति हरखैं। चित्त आकरखैं ॥
सुता मुख परखैं। रतन पट बरखैं ॥
अहो भादौं आठैं उजेरी सुविरद बुलाईयौ ॥१६॥

दधि मधु घोर मिलाये। बहु माट भराये ॥
लै अजिर धराये। गहि सिरन ढ़ुराये ॥
अहो माची है गोरस कीच खार वीथिनु बहे ॥१७॥

छिरकत काहू न बाचैं। कुलाहल माचैं ॥
गोप-गोपी नाचैं। प्रेम बस साँचैं ॥
अहो देखि-देखि नभ वासी पुहुप वरषा करैं ॥१८॥

कर गहैं कंचन थाला। भरे रतन रसाला ॥
वारत मणि माला। छवि निरखि विशाला ॥
अहो दयौ है अमित धन भानु विदा दाई भई ॥१९॥

यह मंगल सुखदाई। उर बसहु सदाई ॥
लली की बधाई। भवन तिहूं छाई ॥
अहो श्रीहरिवंश कृपा बल कछु जस बरनियौ ॥२०॥

जनम-जनम गुन गाऊँ। हित रूप दुलराऊँ ॥
यह टेरि सुनाऊँ। बास वन पाऊँ ॥
अहो वृन्दावन हित देहु बधाई चरन-रति ॥२१॥

अर्थ—गर्भ के प्रथम मास में कीरतिरानी का हृदय अनुराग से भर
ाया और वे अपने भाग्य की धन्यता का अनुभव करने लगीं। उनके सारे
ममङ्गल दूर हो गये तथा प्रेमांकुर के उत्पन्न होने से उनका हृदय प्रसन्न हो
या। (१) जब गर्भ का दूसरा मास आया तो कीरतिरानी ने अपने गर्भवती
होने की सूचना अपनी सखियों को दी। वे सुख का अनुभव करने लगीं और

उनकी गति-मति बदल गयी। (२) गर्भ के तीसरे मास में गोपरानी कीरति जी का हृदय सुख से पूर्ण हो गया और श्रीराधाकुँवरि ने उनके गर्भ में प्रवेश किया। कीरति रानी अपने शरीर में अपूर्व लक्षणों का उदय होते देखकर परम सुख अनुभव करने लगीं और मृदुवाणी बोलने लगीं। (३) चौथे मास में प्रवेश करते ही कीरति रानी के हृदय में परम रस की तरंगें उठने लगीं। उनके सम्पूर्ण कष्ट नष्ट हो गये, भाग्य अनुकूल हो गया और वे अत्यन्त सुँदर दीखने लगीं। (४)पाँचवे मासके लगते ही उनके गर्भवती होने का समाचार कुटुम्बी जनों एवं सम्पूर्ण नगर को मिल गया और वृषभान गोप की बहन बेटियाँ प्रसन्नता पूर्वक अंचल लेकर आसीस देने लगीं। (५) छठे मास में कीरति रानी की छवि और अधिक बढ़ गई। उनके प्रत्येक अंग पुष्ट हो गये उनकी कंचुली (चोली) कस गयी और शरीर में कुछ आलस्य उत्पन्न हो जाने से उनके पैर डगमग पड़ने लगे। (६) गर्भ के सातवें मास में कीरति रानी की सहेलियों ने सदैव उनके साथ रहना आरम्भ कर दिया। वे उनको कभी अकेला नहीं छोड़ती थीं ओर अनेक प्रकार से समझाकर उनके गर्भ की रक्षा करती थीं। (७) आठवें मास में वृषभान जी ने ब्राह्मणों को बुलाकर भोजन कराया। अपने सगे सम्बन्धियों को वस्त्राभूषण दिये और प्रभु से प्रार्थना की कि मैंने नन्दराय को जो वचन दिया है उसको आप पूर्ण करैं। (श्रीश्यामसुन्दर का प्रादुर्भाव होते ही नन्दराय ने वृषभानजी से यह वचन ले लिया था कि यदि तुम्हारे घर में कन्या का जन्म हो तो उसका विवाह मेरे पुत्र के साथ करना होगा।)

(८) नवमे मास में गोप बालायें कीरतिजी से पूछने लगीं कि वह दिन कब होगा जब हम मंगलगान करेंगीं। (९) गर्भ के दशम मास में कीरतिरानी का हृदय उल्लास से पूरित हो गया। वे अपने को कृतकृत्य अनुभव करने लगीं और उनके भवन में प्रकाश फैल गया। वृषभानराय ने तत्काल दाई को बुलाया और उसने आकर कीरतिरानी के गर्भ को शीतल किया (१०) प्रसव करानें के लिए जो दाई बुलायी गयी वह प्रेम का सागर और सम्पूर्ण गुणों से पूर्ण थी। उसको देखकर सब गोप बालायें चकित हो गयीं (११) शेष शिवादिक पूजित अनुपम कन्या (श्रीराधा) का प्रादुर्भाव होते ही वृषभान पत्नी धन्य हो गयीं और तीनों लोकोंमें दुन्दुभि बजने लगे (१२) कन्या का जन्म होते ही वृषभानराय को बाहर चबूतरे पर से अन्दर बुलाया गया और उन्होंने आकर कन्या को देखा तो उसके अंगों में से निकलने वाले प्रकाश को देखकर वे चकित हो गये। नगर वासियों को कन्या के प्रादुर्भाव की खबर मिलते ही वे आनन्दित होकर वृषभानराय के द्वार पर इकटठे हो गये। (१३) नारियाँ मंगल गाने लगीं, सथिये (मांगलिक चि

रखे जाने लगे, शामियाने बाँधे जाने लगे, केले के खम्भ लगाये जाने लगे और श्रीवृषभान के धाम पर ध्वजा और कलश चढ़ाकर उनके आँगन में चौकों की रचना होने लगी। (१४) ब्राह्मण वेदों की ऋचाओं का उच्चारण करने लगे और कन्या के जन्म समय के नक्षत्र पर विचार करके अत्यन्त प्रसन्न हो गये। उन्होंने वृषभान राय से कहा कि यह तुम्हारा भाग्य उदय हुआ है और चौदह भुवनों का सेव्य तुम्हारे घर में प्रादुर्भूत हुआ है। (१५) ब्राह्मणों की वाणी सुनकर कीरतिरानी अत्यन्त हर्षित हो गयी और अपनी पुत्री का अद्भुत मुख देखने लगीं। भाद्रशुक्ला अष्टमी को यशगान आरम्भ हुआ और वस्त्राभूषणों की वर्षा होने लगी। (१६) वृषभानराय ने दधि और मधु को मिलाकर बहुत से पात्र भरवा लिये और उनको अपने आँगन में रखवा दिया। गोपगण उन पात्रों को उठाकर एक दूसरे के शीशों पर उँड़ेलने लगे और आँगनमें गोरस की इतनी कीच मच गयी कि वह गलियों में जाकर गड्ढोंमें भर गया। (१७)गोपगण छिड़कनेमें स्त्री-पुरुषका भेद नहीं रख रहे थे। आनन्द कोलाहल मचा हुआ था। गोप-गोपियाँ प्रेम विवश होकर नाच रहे थे और यह सब देखकर देवतागण आकाश से पुष्पों की वर्षा कर रहे थे। (१८) वृषभान गोप अपनी कन्या की विशाल छवि को देखकर उसके ऊपर थाल भर-भरकर सुवर्ण, रत्न एवं मणियों की माला न्यौछावर कर रहे थे और वह सब अमित धन उन्होंने दाई को देकर उसे विदा कर दिया।(१९)चाचा हित वृन्दावनदासजी कहते हैं कि तीनों लोकों में पूरित श्रीराधा की यह मंगल बधाई मेरे हृदयमें सदा निवास करती रहे। मैंने श्रीहरिवंशचन्द्र की कृपा बल से यहाँ कुछ यश-वर्णन किया है। (२०) मेरी यही अभिलाषा है कि मैं जन्म-जन्म श्रीराधाके अद्भुत रूप का दुलार करता हुआ उनके गुणों का गान करता रहूँ। मुझे श्रीवृन्दावन का अखंड-वास मिले और श्रीराधा के जन्म की बधाई में मुझे उनके चरणकमलों की रति प्राप्त हो। (२१)

अष्टमी के दिन निम्नलिखित बधाइयाँ मंगला आरती के पीछे गायी जाती हैं—

पद—नवल नृपति वृषभान राइ कैं बाजत आजु बधाई री।
घुरत निसान करत कौतूहल कीरति कन्या जाई री॥
अपने-अपने गृह तें सुनि-सुनि कंचन थार सजाई री।
भूषन बसन विविध भाँतिन के गोपराज घर आईं री॥

कीरति रहसि-रहसि सुख फूलीं आनंद उर न समाई री ।
इच्छा सफल भई मन में की पूरबले दिन पाई री ॥
जसुदा सुनि आनँद अति बाढ़्यौ मोहन की करौं सगाई री ।
जैश्री कमलनैन रसिकन की प्यारी प्रान जीवन सुखदाई री ॥

अर्थ—नवल नृपति श्रीवृषभानुराय के घर आज बधाई बज रही है उनकी रानी कीरतिजी ने कन्या को जन्म दिया है, इसलिये उनके द्वार नौबत बज रही है और व्रजवासी लोग आनन्द-कौतूहल कर रहे हैं। गो बालाओं ने जब कन्या के प्रादुर्भाव की बात सुनी तो उन्होंने अपने घरों मांगलिक वस्त्राभूषणों से कंचनथाल सजाने आरम्भ कर दिये और उन लेकर वृषभानराय के घर आयीं। कीरतिरानी मन ही मन फूल रही और उनके हृदय में आनन्द समा नहीं रहा है। श्रीराधा के जन्म के स उनकी सब इच्छायें पूर्ण हो गयीं हैं और वे यह मान गयी हैं कि मुझे य कन्या मेरे पूर्वजन्मके पुण्यों के फलस्वरूप मिली है। नंदगाँव में जब यशोदा ने कन्या के जन्म का समाचार सुना तो उनके हृदय में अत्यन्त आनंद गया और वे सोचने लगी कि मैं अपने मदनमोहन की सगाई इस कन्या साथ ही करूँगी। गो० श्रीकमलनयनजी कहते हैं कि यह कन्या रसिकज को सुख देने वाली और उनका प्रिय प्राण जीवनधन है।

पद—प्रगटी श्रीवृषभान गोप कें सोभा की निधि आई री ।
धन्य भाग कीरतिदा रानी जिन यह कन्या जाई री ॥
सुनत ही धाईं सखी सहेली मनवांछित फल पाई री ।
हाथन कञ्चन थार विराजत मंगल गावत आईं री ॥
महारानी कीरति आदर दै भीतर भवन बुलाईं री ।
भूषन वसन विविध नाना रँग नख-सिख तें पहिराईं री ॥
दधि कादौं भादौं झर लायौ आँगन कीच मचाई री ।
राधामोहन जोरी अविचल जैश्री कमलनैन सुखदाई री ॥

अर्थ—श्रीवृषभान गोप के यहाँ शोभा की निधि प्रकट हुयी है। उ कीरतिरानी को धन्य है जिन्होंने इस कन्या को जन्म दिया है। सब स सहेलियों को उनका मनवांछित फल मिल गया है और वे हाथों में कंच थाल लेकर मंगल गान करती हुई वृषभानजी के द्वार पर पहुँच गयीं है

रति महारानी ने सबको आदर देकर अन्दर बुलाया और नाना रंग के
आभूषण उनको नख से शिखा पर्यन्त पहनाये। गोप-गोपियों ने दधिकांदे
झड़ी लगाकर वृषभान गोप के आँगन में कीच मचा दी। गो० कमल-
नजी कहते हैं कि राधा और मोहनलाल की यह सुखदाई जोड़ी अविचल
ी रहे।

द-भादौं सुदि आठैं उजियारी।
श्रीवृषभान गोप के मन्दिर प्रगटी राधा प्यारी ॥
नाचत नारि नवेली छवि सौं पहिरैं रँग-रँग सारी।
मंगल घर-घर दिखि बरसाने कहत रमा हौं वारी ॥
इक आई इक आवत गावत इक सुनि साजत नारी।
चंचल कुण्डल अलकैं झलकैं करन विराजत थारी ॥
भई बधाई कही न जाई छबि छाई अति भारी।
अस भई खोर पौर ह्वै दधि घृत बहि चलेउमगि पनारी ॥
कीरति की कल कीरति जग में भाग सुहाग दुलारी।
दामोदर हित वृन्दावन मिलि विहरत लाल विहारी ॥

अर्थ—श्रीवृषभान गोप के मन्दिर में भादों शुक्ला अष्टमी को राधा-
प्यारी ने जन्म लिया है। व्रज की नबेली नारियाँ अनेक रंगों की साड़ियाँ
पहने हुये छवि पूर्वक नृत्य कर रही हैं। बरसाने के प्रत्येक घर में मंगल
उत्सव देखकर लक्ष्मी उस पर बलिहार हो रही है। कुछ व्रजनारियाँ वृष-
भानजी के यहाँ पहुँच गयी हैं, कुछ गाती हुयी आ रही हैं और कुछ अपने
घरों में, जन्म का समाचार सुनकर अपना शृंगार कर रही हैं। जो व्रज-
नारियाँ आ रही हैं उनके हाथोंमें थालियाँ शोभायमान हैं और उनके चंचल
कुण्डलों में उलझी हुई अलकें झलक रही हैं। इस जन्मोत्सव से चारों ओर
भारी छवि छा गयी है और उसका वर्णन मैं नहीं कर पा रहा हूँ। श्रीवृष-
भानरायके द्वार पर दधिघृत की ऐसी वर्षा हुई है कि वह गलियों में जाकर
नालियों में बह रहा है। कीरतिरानी की दुलारी यह कन्या भाग-सुहाग से
पूर्ण है और उनको सुन्दर कीर्ति को संसार में फैलाने वाली है। दामोदर
स्वामीजी कहते हैं कि इन श्रीराधा के साथ मिलकर लाल-बिहारी (श्याम-
सुन्दर) अब श्रीवृन्दावन में विहार करेंगे।

पद—बरसानै तें नारिदौरि इक नंद-महर घर आई री।
आजु सखी मंगल में मंगल कीरति कन्या जाई री॥
सुनि जसुमति मन हर्ष भयौ अति बोलि लईं ब्रजबाला।
मुक्ता मणि माला भूषण वर पठई सौंज रसाला॥
चलीं गज गामिनि साथन हाथन कंचन थार सुहाये।
कमलन के ऊपर खेलत मनु अगनित चन्द सुआये॥
डहडहे मुख छबि छाजत राजत लाजत कोटिक मैना।
कंजन पर निर्त्तत मनु खंजन अंजन रंजित नैना॥
कुंडल मंडित गंड बने अति उपमा अधिक विराजै।
हार सुढ़ार उरन पर सोहैं निरखि सची छवि लाजै॥
गावत गीत करत जग पावन भामिनि मन्दिर आईं।
आनन्द के आँगन मनु आनन्द सानँद बजत बधाई॥
देखि मुदित वृषभान भये अति भेटैं रुचि सौं लीनीं।
गदगद कण्ठ सबन सौं बोले वीथी पावन कीनीं॥
कीरति ढिग निरखी सुठ कन्या धन्या अधिक अपारा।
कौतिक में कौतिक रस भीनो वरषत सौसन धारा॥
सब जग धाम धाम पुनि जाकौ सो सुधाम जाहि मानैं।
नन्ददास सुख कौ सुख सागर प्रगटी है बरसानैं॥

अर्थ—नन्द यशोदा के घर एक व्रजवनिता दौड़ी हुई बरसाने से आयी है। उसने बताया कि कीरतिरानी के कन्या प्रादुर्भूत होने से मंगल में मंगल उत्पन्न हो गया है अर्थात् तुम्हारे घर में जो पुत्र जन्मसे मंगल छाया हुआ है उसमें यह नया मंगल प्रकट हो गया है। यह समाचार सुनते ही यशोदाजी के मन में अत्यन्त हर्ष हुआ और उन्होंने ब्रजबालाओं को बुलाया तथा उनको मुक्ता, मणिमाला तथा अन्य आभूषण देकर बृषभानराय के भवन जाने की आज्ञा दी। बृषभान भवन की ओर जाती हुई गजगामिनी ब्रजबालाओं के हाथ में कंचन के थाल इस प्रकार सुशोभित हैं मानो कमलों के ऊपर अगणित चन्द्र खेलते हुये चले आ रहे हैं। ब्रजबालाओं के डहडहे (प्रफुल्लित) मुखों की चारों ओर फैली हुई छवि को देखकर करोड़ों कामदेव

लज्जित हो रहे हैं। उन मुखों के अंजन रंजित नेत्रों को देखकर ऐसा लगता है मानों कमल के ऊपर खंजन नृत्य कर रहे हैं। ब्रजबालाओं के कुण्डलों से मण्डित कपोल अत्यन्त शोभायमान हैं। उनके कण्ठ में पहरे हुये हार टूट-टूट कर चरणों पर गिर रहे हैं जिसकी छवि को देखकर इन्द्राणी लज्जित हो रही है। मांगलिक गीतों के द्वारा जगत को पवित्र बनाती हुयी ब्रजबालाओं ने वृषभान मन्दिर में प्रवेश किया। उनको देखकर वृषभानराय बहुत प्रसन्न हुये और वे जो भेटें लायी थीं उनको रुचिपूर्वक ग्रहण किया तथा गद्‌गद कण्ठ से उनसे बोले कि आपने यहाँ पधार कर बरसाने की गलियों को पवित्र कर दिया। नन्दगाँव की ब्रजबनिताओं नें कीरतिरानी के निकट अत्यन्त धन्या सुन्दर कन्याको देखा। श्रीकृष्ण-जन्म के कौतुक में यह नवीन कौतुक देखकर सब बनितायें रस में शिखा से नख पर्यन्त भीग गईं। नन्ददासजी कहते हैं कि सम्पूर्ण जगधाम जिनका धाम अर्थात् निवास-स्थल है वे श्रीकृष्ण जिन श्रीराधा को अपना सुधाम अर्थात् पूर्ण प्रकाश मानते हैं उन सुख स्वरूप की सुखसागर रूपा श्रीराधा आज बरसाने में प्रकट हुयी हैं।

पद—बाजत आजु बधाई वृषभानु नृपति घर।
कीरतिदा रानी सुख सानी सुता सुलक्षन जाई,
वृषभान नृपति घर॥
निरवधि प्रेम अवधि करुनामय प्रगटी सब सुखदाई।
मुदित भये शिव शारद नारद आनंद उर न समाई॥
शक्ति सबै दासी हैं जाकी श्री हू तें अधिक सुहाई।
नन्ददास पलना में पौढे किलकत कुंवर कन्हाई॥

अर्थ—आज वृषभान नृपति के घर बधाई बज रही है क्योंकि सुख से भरित कीरतिरानी ने सुन्दर लक्षणों वाली कन्या को जन्म दिया है। यह कन्या असीम प्रेम की सीमा, करुणामयी एवं सम्पूर्ण सुखों की दाता है। इसके जन्म से शिव, शारदा और नारद के हृदय में आनन्द नहीं समा रहा है। सम्पूर्ण शक्तियाँ इस कन्या की दासी हैं और इसकी शोभा लक्ष्मी से भी अधिक है। नन्ददासजी कहते हैं कि इस कन्या के जन्म का समाचार सुनकर पलना में पौढे हुए कुँवर कन्हाई आनन्दोल्लास से किलक रहे हैं।

पद—बरसाने वृषभान गोप घर सोभा की निधि आई री।
धनि-धनि कूख महरि कीरति की जिन यह कन्या जाई री॥
अखिल लोक भुव नाग लोक में देखी सुनी न निकाई री।
सिंधु सुता गिरि सुता सची रति नहिं समान कोऊ पाई री॥
आनंद मुदित जसोदा रानी कान्हर की करौं सगाई री।
प्रभु कल्यान गिरधर की जोरी विधना यहै बनाई री।

अर्थ—बरसाने में वृषभान गोप के घर शोभा की निधि (सागर) प्रकट हुयी हैं। कीरतिरानी की कोख को धन्य है जिसने ऐसी कन्याको जन्म दिया है। तीनों लोकों में इस कन्या के जैसी सुन्दरता किसी ने देखी सुनी नहीं है। लक्ष्मी, पार्वती, इन्द्राणी और रति (कामदेव की पत्नी) भी इस कन्या के समान नहीं हैं। कन्या के जन्म का समाचार पाकर यशोदा रानी प्रसन्न होकर सोच रही हैं कि मैं अपने कान्हा की सगाई इस कन्या के साथ ही करूँगी। कल्याण प्रभु कहते हैं कि ब्रह्मा ने गिरधर की यही जोड़ी बनाई है।

पद—आजु प्रगटीं श्रीवृषभान भवन में श्रीवृन्दावन रानी।
रसिकन हित रस सागर नागरि ब्रज धरु करी रवानी।
सत चित आनंद लली लला वन यह मति बिरले जानी।
नित्य विहार प्रगट करिवे कौं प्रगटे आनंद दानी।
कीरति-भान नंद-जसुमति मिलि सुभग सगाई ठानी।
संपति सकल लुटाइ चाइ सौं दै-दै मान अमानी।
सुर सुमनन वरषावत गावत बोलत जय जय बानी।
प्रेमदास हित गौर स्याम की नित चित बसौ कहानी।

आज वृषभान भवन में श्रीवृन्दावन रानी प्रकट हुयी हैं। ये रस सागर हैं और इन्होंने रसिकजनों के लिये ब्रजभूमि को सुशोभित किया है। इस श्रीवृन्दावनमें बिहार करने वाले श्यामा-श्याम सच्चिदानन्दरूप हैं, इस को कोई बिरला ही समझता है। आनन्द का दान करने वाले ये दोनों नित्य विहार प्रकट करनेके लिए प्रकट हुये हैं। एक ओर कीरतिरानी और वृष... तथा दूसरी ओर नन्द-यशोदा ने मिलकर श्यामा-श्याम की सगाई जन्म के तत्काल बाद ही कर दी। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति इन दोनों के

न्यौछावर करके लुटा दी और ब्रजवासियों को अतुलित सम्मान प्रदान किया। यह देखकर देवतागण पुष्प वर्षा करने लगे और जय-जय वाणी बोलने लगे। प्रेमदासजी कहते हैं कि मेरे चित्त में गौर श्याम की प्रेम कहानी नित्य बसी रहे।

पद–अरी मेरी वारी राधा या जोगिया कौं देखत तुरत डरैगी।
अंग भसम बाघंवर धारैं व्याल गरैं लखि कोधौं री धीर धरैगी॥
गदगद गावै अलख मनावै बिनु परचे को प्रतीति करैगी।
वृन्दावन हित रूपदरस चाहत गोप कन्या कैसौ,
तू रावल फिरि जाहु कोऊ लरैगी॥

अर्थ—(श्रीराधा के जन्म का समाचार पाकर शिवजी उनके दर्शन के लिए बरसाने पधारे हैं और श्रीराधा के दर्शनों के लिए कीरतिरानी से प्रार्थना करते हैं। किन्तु कीरतिरानी उनका वेश देखकर शंकित हो जाती हैं और अपनी सहेली से कहती हैं)।

हे सहेली, मेरी छोटी-सी राधा इस जोगी को देखकर तुरन्त डर जायेगी। इसने अपने अंग पर भस्म लगा रखी है, बाघम्बर ओढ़ रखा है और गले में साँप लटक रहे हैं। इस विकट रूप को देखकर मेरी पुत्री कैसे धीर धारण कर सकेगी? यह जोगी गद्गद् स्वर में गा रहा है और अलख जगा रहा है। किन्तु परिचय के बिना कौन इसका विश्वास करेगा? चाचा हित वृन्दावनदासजी कहते हैं कि यह गोप कन्या श्रीराधा का दर्शन करना चाहता है किन्तु इससे आदरपूर्वक कह दो कि तुमको वापिस चला जाना चाहिये अन्यथा कोई गोपी तुमसे लड़ पड़ेगी।

पद–अरी माई मेरौ वचन सुनि भागन पूरी और कछू नहिं लैहौं।
जननी-जनक प्रताप बढ़ावन, जनमीं अतिलड़ो याकौ रूप-गुन गैहौं॥
लठा छुवाइ चरन कन्या के, जंत्र यहै जु अमर करि जैहौं।
वृन्दावन हितरूप सत्य मन-क्रम-वच करिकैं हरषि आसिका दैहौं॥

अर्थ—शिवजी ने कीरतिरानी से कहा है कि हे पूर्ण भाग्यशालिनी, मेरी बात सुनो। मुझे किसी वस्तु की आकांक्षा नहीं है। माता पिता का प्रताप बढ़ाने वाली जिस अतिलड़ी ने तुम्हारे यहाँ जन्म लिया है मैं उसके रूप-गुण का गान करना चाहता हूँ। मुझको अपनी कन्या के दर्शन करा दो।

मेरे मस्तक में एक सिद्ध यंत्र है अत. मैं जटाओं का कन्या के चरणों से स्पर्श कराकर उसे अमर बना देना चाहता हूँ। तुम इस बात को सत्य मानो कि मैं अपने मन वाणी और कर्म को एकत्रित करके हर्षपूर्वक कन्या को असीस देना चाहता हूँ।

पद–आज बधाई है बरसानें ।

कुंवरि किशोरी जनम लियौ सब लोक बजे सहदानें ॥
कहत नंद वृषभानराय सौं और बात को जानें ।
आजु भैया, ब्रजवासी हम सब तेरेई हाथ बिकानें ॥
या कन्या के आगैं कोटिक बेटन को अब मानें ।
तेरे भलैं भलौ सबहिनु कौ आनन्द कौन बखानैं ॥
छैल छबीले ग्वाल रँगीले हरद दही लपटानें ।
भूषन वसन विविध पहिरें तन गनत न राजा-रानें ॥
नाचत गावत प्रमुदित ह्वै नर नारिनु को पहिचानें ।
व्यास रसिक सब तन-मन फूले नीरस सबै खिसानैं ॥

अर्थ—आज बरसाने में बधाई बज रही है। कुंवरि किशोरीके जन्म लेने से सम्पूर्ण लोकों में दुन्दुभि बजने लगी हैं। नन्दराय वृषभानजी से कहते हैं कि सौ बातों की एक बात यह है कि भैया, आज हम सब ब्रजवासी तुम्हारे हाथ बिक गये हैं। इस कन्या के आगे करोड़ बेटों को भी कौन मानेगा ? इसलिए तुम्हारी कुशलतामें ही सबकी कुशलता है और यह बात मन में आने पर जो आनंद उत्पन्न होता है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। छैल छबीले और प्रेम रंग में रंगे हुए ग्वाल बाल दही और हल्दी में सने हुये हैं। उन्होंने विविध प्रकारके भूषण बसन पहन रखे हैं और प्रेमोल्लास में भरकर राजा-महाराजों को भी तुच्छ समझ रहे हैं। वे प्रसन्नता पूर्वक नाच गा रहे हैं। प्रेममत्त स्थिति में उनको नर-नारियों की पहिचान नहीं रही है और वे सबके साथ एक-सा व्यवहार कर रहे हैं। व्यासदासजी कहते हैं कि रसिकजनों के तन-मन तो प्रफुल्लित हो रहे हैं और नीरस(रस-शून्य) लोग उनको देखकर खिसिया रहे हैं—लज्जित हो रहे हैं।

पद–कुंवरि किशोरी जनमत ही ब्रज-जन फूले तन-मन माई
श्री बरसाने गोपराज घर बाजत सुनी है बधाई ॥टेक॥

रानी जग जानी श्रीकीरति भाग भरी छवि छाई।
रूप प्रेम रस अवधि ललित मुख सुखनिधि कन्या जाई॥
सदन-सदन आनँद महा मंगल शोभा कही न जाई।
नर नारी हरषे सब ऐसें मनौं रंक निधि पाई॥१॥

बनि-बनि बनिता भवन-भवन तें चलीं जुरि छवि सौं राजैं।
वदन चन्द आनंद भरे मनौं हाथन थार विराजैं॥
सौरभ जल सौं सींची बीथी महमहात मन मोहैं।
चंचल गति दामिनि-सी भामिनी गावत गीतन सोहैं॥२॥

आईं श्रीवृषभान भवन जहाँ ऊँचे अटा-अटारी।
कनक कलश पर धुजा पताका जगमगात छवि न्यारी।
बाजत द्वारे ताल पखावज गोमुख दुंदुभि भेरी।
गोपकुमार मैन से डोलत बोलत दै-दै हेरी॥३॥

कंचन धरनी मणिमय आँगन रँग भरी नारी नाचैं।
हरषैं वरषैं दधि घृत हरदी छिरकत काहू न बाचैं॥
इक गहि चोवा चंदन छिरकैं इक पय भाजन ढ़ारैं।
एक परस्पर माखन लै-लै तकि-तकि हँसि-हँसि मारैं॥४॥

इक गावैं इक जंत्र बजावैं इक लै भेटन आवैं।
इक निकसैं एक पैठैं मन्दिर निरखि लली सुख पावैं॥
इक कीरति के चरणन गहि-गहि धनि-धनि वचन उचारैं।
एक कुंवरि कौ रूप विलोकत तन-मन-धन कौं वारैं॥५॥

एक रहीं इकटक लखि शोभा इक तन फूली डोलैं।
इक दिखि आवैं आँगन छवि सों जै-जै बानी बोलैं॥
इक पुनि लै-लै मंदिर में तें गोरस घट ढरकावैं।
बहे पनारे न्यारे-न्यारे वीथिन कीच मचावैं॥६॥

कनक भीत विद्रुम मणि देहरि नग खचे खंभ विराजैं ।
लटकत तोरन रतन जगमगैं हाटक फाटक राजैं ॥
कहा कहौं सुन्दर मंदिर की सोभा कहत न आवै ।
दमकत बनितन के तन चंचल प्रतिबिंबित दरसावै ॥७॥

चारु चँदोवा मुक्ता झालर घर-घर आँगन सोहैं ।
झलमलाइ रही चहुं दिसि सोभा जो जोहैं सो मोहैं ॥
को कबि बरनैं महा महोत्सव सुर तिय हिय सरसानें ।
निर्त्तंत गावत कुसुमन बरषत सुन्दर श्री बरसानें ॥८॥

बाबा नंद रु महरि जसोदा सुनि-सुनि अति हरषाहीं ।
नंदलला आनंद भयौ मन फूले मन हीं माहीं ॥
द्विज मागद बंदीजन फूले जै-जै बानी राजैं ।
गोप सभा के मध्य नृपति मणि श्री वृषभान विराजैं ॥९॥

जहाँ-तहाँ जाकी चलत सुधा-सी निर्मल सुजस कहानी ।
इन्द्र समान सबन पर बरषे महा मुदित बड़दानी ॥
विप्रन धेनु दई बहु बिधि सौं कनक सींग खुर रूपे ।
निरधन धनी किये धन दै-दै देत विचार न भूपे ॥१०॥

भ्राता बन्धु सबै पहिराये दै केसर के टीके ।
भये बिदा सुख भीजे तन-मन चलत बिराजत नीके ॥
दान मान सबहिनु कौं दीनौं जुवती जन पहिराई ।
मुक्तामणि मय कंचन भूषन सारी सुरंग सुहाई ॥११॥

सब काहू कौं मोद बढ़्यौ अति भयौ जु मन कौ भायौ ।
पुर-पुर घर-घर नर नारिनु मिलि लोक-लोकजस गायौ ॥
श्रीराधा रसिकन की जीवन प्रकटीं सब सुखदाई ।
दामोदर हित श्रीवृन्दावन बास बधाई पाई ॥१२॥

अर्थ—कुंवरि किशोरी श्रीराधा का जन्म होते ही सब ब्रजवासियोंके तन-मन हर्ष से फूल उठे–उन्होंने बरसाने में गोपराज श्रीवृषभान के घर में बधाई बजती हुई सुनी है। वृषभानजी के घर में भाग्यशालिनी कीरतिजी की छवि चारों ओर फैल रही है। उन्होंने रूप-प्रेम-रस की अवधि, सुख की सागर सुन्दर मुख वाली कन्या को जन्म दिया है। बरसाने के घर-घर में आनन्द मंगल की शोभा कहनेमें नहीं आ रही है और वहाँके सब नर-नारी इस प्रकार हर्षित हुये हैं जैसे भिखारी को खजाना मिल गया हो ॥१॥

बरसाने के प्रत्येक घर से गोप बालायें अपना श्रृंगार करके इकट्ठी हुई हैं और शोभा बिखेरती हुयी वृषभान भवन की ओर जा रही हैं। उनके मुखचन्द्र आनन्द से भरे हुये हैं और उनके हाथों में मांगलिक सामग्री से पूर्ण थाल शोभा दे रहे हैं। बरसाने की सुगन्धित जल से छिड़की हुयी गलियोंमें से मनमोहक सुगन्ध उठ रही है। उन गलियों में दामिनी के समान गोप-बालायें गीत गाती हुयी चंचल गति से आ रही हैं ॥२॥

वे ऊँचे कोठे कोठरियों वाले श्रीवृषभान भवन में पहुँची जहाँ सुवर्ण कलशों के ऊपर ध्वजा-पताका जगमगा कर शोभा में वृद्धि कर रहो हैं। इस भवन के द्वार पर पखावज, गोमुख, दुन्दुभि, भेरी आदि बज रहे हैं और कामदेव के समान सुन्दर गोप कुमार 'हेरी' देते हुये घूम रहे हैं ॥३॥

इस भवन की धरती कंचन की बनी हुयी है, आँगन मणियोंका बना हुआ है और उस पर प्रेम रंग से भरी हुयी गोप नारियाँ नाच रही हैं। वे परम हर्षित होकर दधि-घृत और हल्दी की वर्षा सब लोगों के ऊपर कर रही हैं और किसी को भी छोड़ नहीं रही हैं। उनमें से कुछ चोबा चन्दन (सुगन्धित पदार्थ) छिड़क रही हैं और कोई दूध से भरे बर्तन एक दूसरे के ऊपर डाल रही हैं। कोई माखन हाथ में लेकर एक दूसरे को हँस-हँस कर और ताक-ताक कर मार रही हैं ॥४॥

कुछ ब्रजस्त्रियाँ गा रहीं हैं, कुछ बाजे बजा रही हैं और कुछ भेटें लेकर आ रही हैं। एक भवन में घुस रही है और वहाँ राधा कुँवरि को देखकर अत्यन्त सुखी हो रही है। कोई कीरतिरानी के चरणों को पकड़कर धन्य-धन्य वचन बोल रही है। कोई राधा कुँवरि का अद्भुत रूप देखकर अपने तन–मन–धन को उन पर न्यौछावर कर रही है ॥५॥

कोई श्रीराधा कुँवरि की अद्भुत शोभा एकटक निहार रही है और कोई उस शोभा को देखकर फूली-फूली डोल रही है। कोई उस छवि को

देखकर आँगन में खड़ी हुई जै-जै वाणी बोल रही है। कोई वृषभान मन्दिर में से दूधके घड़े उठाकर उनको जहाँ-तहाँ उँड़ेल रही हैं जिससे अलग-अलग पनारे बह उठे हैं और उन्होंने गलियों में पहुँचकर कीच मचा दी है ॥६॥

श्रीबृषभान मन्दिर की दीवालें मूँगे की बनी हुयी हैं। वहाँ की देहलियाँ मणियों की बनी हुई हैं और वहाँ नग जड़े हुए खम्भ शोभायमान हैं द्वार पर लटके हुये तोरणों में रत्न जगमगा रहे हैं और वहाँ के फाटक सुवर्ण के बने हुये हैं। इस सुन्दर मन्दिर की शोभा का वर्णन करने में मैं अपने को असमर्थ पा रहा हूँ। इस मन्दिर में एकत्रित बनिताओं के चंचल शरीरों के प्रतिबिम्ब भूमि में झलक रहे हैं ॥७॥

बरसाने के घर-घर के आँगनों में मोतियों की झालर लगे हुए चंदोवे शोभायमान हैं—उनकी शोभा चारों ओर जगमगा रही है। उनको जो देखता है वही मोहित हो जाता है। उस महामहोत्सव का वर्णन कौन कवि कर सकता है जिसको देखकर देवताओं की स्त्रियों के भी मन सरस बन गये हैं। इस सुन्दर श्री बरसाने के नर-नारी नाच रहे हैं, गा रहे हैं और फूलों की वर्षा कर रहे हैं ॥८॥

नन्दगाँव में जब श्रीराधा के जन्म का समाचार पहुँचा तो नन्दबाबा और यशोदाजी अत्यन्त हर्षित हो गये और नन्दलाल मन ही मन में आनंद से फूल उठे। ब्राह्मण, मागध, बन्दीजन फूले-फूले जय-जय वाणी बोल रहे हैं और गोपों की सभा के मध्य में भूपमणि श्रीवृषभान विराज रहे हैं ॥९॥

श्रीवृषभानजी के सुयश की अमृत-सी निर्मल चर्चा चल रही है। महानदानी श्रीवृषभान आज अत्यन्त प्रसन्न चित्त से सब लोगों पर इन्द्र के समान धन की वर्षा कर रहे हैं। उन्होंने ब्राह्मणों को सोने से मढ़े हुए सींगों वाली और चाँदी से मढ़े हुये खुरों वाली अनेक गायें दान में विधि-पूर्वक दी हैं। आज राजा वृषभानजी को दान देने में कोई विचार नहीं हो रहा है और उन्होंने अनेक निर्धनों को धन देकर धनी बना दिया है ॥१०॥

वृषभानजी ने अपने सब भ्राता-बन्धुओं को वस्त्राभूषण पहनाकर उनको केसर के टीके लगाये हैं। सब लोगों के तन-मन सुख से भीग गये और जब वे वहाँसे विदा होकर अपने घरों की ओर चले तो अत्यन्त शोभायमान हुये। वृषभानजी ने सभी को सम्मानपूर्वक दान दिया और सब ब्रज युवतियों को मोती और मणियाँ जड़े हुये सोने के आभूषण एवं लाल रंग की साड़ियाँ पहिनायीं ॥११॥

अपनी रुचि के अनुसार दान पाकरसबके मन में अत्यन्त मोद उत्पन्न हो गया। ब्रजमण्डल के गाँव-गाँव और घर-घर में नर-नारियों ने मिलकर तीनों लोकों में वृषभानजी का यश फैला दिया। स्वामी दामोदरदासजी कहते हैं कि रसिकजनों की जीवन और सम्पूर्ण सुखदाता श्रीराधा आज प्रकट हुई हैं और उन्होंने मुझको श्रीवृन्दावनवास रूपी बधाई प्रदान की है ॥१२॥

असीस—लली चिरजीबनी तेरी।
अब या ब्रज सुख सिंधु बढ़ैगौ सुन असीस मेरी॥
हौं हूं मच्चल परचौ या पौरी मुख देखौं रहौं नेरी।
वृन्दावन हित रूप भाग्यफल दैव दयौ एरी॥

अर्थ—कीरतिरानी को असीस देता हुआ ढ़ाँढ़ी कहता है हे रानी, तुम्हारी राधाकुँवरि चिरजीवनी हो। तुम यह मेरी भी असीस सुनो कि तुम्हारी कन्या के कारण अब इस व्रज प्रदेश में सुख का सागर लहरायेगा। मैं भी आपके द्वार पर मचलकर पड़ गया हूँ और मैं आपके निकट रहकर आपकी कुँवरि के दर्शन करता रहूँगा। विधाता ने मुझे मेरे भाग्य का यह महाफल प्रदान किया है।

★★

ढाँढ़ी के आलाप चारी के दोहा

श्रीगुरु श्रीगोविंद पद मंगल मय धरि ध्यान।
मंगल श्रीवृषभान घर ज्यौं पाऊँ सनमान ॥१॥

ढाँढ़ी आयौ जनम सुन आदर दीनौं भान।
मगन भयौ बरनत सुजस अब बड़ी भई व्रजकान ॥२॥

कौन सुकृत मो फल्यौ जो यह मंगल दरस्यौ आज।
व्रजवासी फूले फिरें अब आयौ ब्रज में राज ॥३॥

हँस बोले वृषभानजू ढ़ाँढ़ी होड़ौ आव ।
मुंह माँग्यौ तोहि देंहुगौ कछु गोपन के जस गाव ॥४॥

वंशावली गान–छंद रढ़्ढ़ा झप ताल

ढाढ़ी गाय वृषभान कौ ध्यान धरिकैं ।
सिद्धि नवनिद्धि सब द्वार जाके परीं,
माँग तापै जांय दरिद्र टरिकैं ॥
अनुज अग्रज सहित भानु बैठे जहाँ,
गोपकुल सभा गुन गनन ज्ञाता ।
पाइ बहु मान ढाँढ़ी सुजस उच्चरैं,
सुनौं जिजमान वांछित सुदाता ॥

दोहा–बरसानौ गिरिबर सुखद तिहिं ढिग वास अवास ।
कंचन मय रचना रुचिर गोपुर गृह सुख रास ॥१॥

रमा उमा शचि आदि वै टहल करत हुलसांहि ।
कोटि-कोटि बैकुण्ठ हू तिहिं सम कहे ना जांहि ॥२॥

स्वच्छासन अरु सुहृद इक नाम दुहुंन मन आन ।
महाराज वृषभान की प्रकट अथाई जान ॥३॥

अब वंशावलि भान की कहौं कछुक विस्तार ।
ज्यौं मम पितु मोते कह्यौ आरम्भ मत अनुसार ॥४॥

सूर्य वंश में प्रगटियौ सोम वंश सुख सार ।
तिन राजन के वरन ते होत बहुत विस्तार ॥५॥

जाते मेरौ काज है ताकौ वरनौं वंश ।
जाके बरनत सब करैं देव आदि परसंस ॥६॥
महाराज भये नोपजू जग में तिनकी आन ।
तिनके सुत भये जूपजू राखत सबकौ मान ॥७॥
नृप दयाधि तिनके भये दया धर्म सौं लीन ।
धर्म धीर तिनके भये कछु संतति करि हीन ॥८॥
कठिन तपस्या तिन करी तेरह वर्ष प्रमान ।
गोवर्धन पर्वत विषै शिव दीनों वरदान ॥९॥
भुव भूषन तिनके भये राजा श्रीमहीमान ।
सुखदा पतनी तासु की जासु कूँख वृषभान ॥१०॥
नाम नृपति वृषभानु कौ लेतहि पूरन काम ।
अष्टसिद्धि नवनिद्धि तब तजैं न ताकौ धाम ॥११॥

चौपाई

महीभान दादे कौ नाम । सुखदा दादी अति अभिराम ।
श्रीवृषभान उदार गंभीर । जनक राधिका सुकृत शरीर ॥
कीरतिदा माता विख्यात । कहत रत्न गर्भा सुखदात ।
हौंसीये जु ललीकी मौसी । अति हुलास हौंसन भर हौंसी ॥
नाना इन्दु नाम है जाकौ । मुखरा रानी कहियत ताकौं ।
बड़ो भैया श्रीदामा नाम । अति सुकुमार परम अभिराम ॥
भादौं अष्टमी तिथि उजियारी । नक्षत्र विशाखा रुचिर महारी ।
तादिन जनम लियौ श्रीराधा । कीरति वेद पुरान अगाधा ॥

सुभनक्षत्र गुरुवार है आई। अरुणोदय प्रगटी सुखदाई।
घर घर महा महौछौ होय। नर नारिन कैं आनँद जोय॥
घर घर तोरन वंदन वार। मंगल गावत व्रज की नार।
पंच शब्द बाजैं नौशान। राखत सब काहू कौ मान॥
गयौ बधौवा नन्द की पौरि। सब नन्दीश्वर आयौ दौरि।
जसुमति नन्द बधाई लाये। श्रीवृषभान अजिर में आये॥
मिलत परस्पर आनँद बाढ़्यौ। सो सुख हम पर परत न काढ़्यौ।
नाचत नन्द और वृषभान। जसुमति वारत अपने प्रान॥
पहिले बोल किये हे सारे। आजु विधाता पूरे पारे॥
कीरति गोदी दियौ कन्हैया। नाचत परमेश्वर की मैया।
दुहूं सजन मन आनन्द भावै। किशोरीदास यह मंगल गावै॥

★★

३२

हमारे अन्य प्रकाशन

१. श्रीहित हरिवंश गोस्वामी :
सम्प्रदाय और साहित्य मूल्य ६०.००

२. श्रीरसिक अनन्य माल–
महात्मा भगवत् मुदित कृत–मूल्य ४.००

लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व रचे गए इस ग्रन्थ में श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय के प्रारम्भिक वाणीकारों एवं रसिक-संतों का जीवन-परिचय सुललित ब्रज भाषा पद्य में दिया है।

३. अनन्य निष्ठा–

इसमें श्रीललिताचरण गोस्वामी द्वारा रचित पाँच एकांकी नाटक संग्रहीत हैं। इनमें से चार नाटक श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय के संस्थापक श्रीहित हरिवंश गोस्वामी के जीवन से सम्बन्धित हैं तथा पाँचवे में श्रीराधा-जन्मोत्सव का नाटकीय उपस्थापन है।

पृष्ठ सं० १३४, डिमाई साइज, मूल्य ३.५०

४. प्रेम की पीर– (रचयिता–श्रीभोलानाथ भोरी सखी')

श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय के अन्तिम सुकवि के सुललित एवं चुने हुए पदों का संग्रह।

पृष्ठ सं० १६०, मूल्य ७.००

५. श्रीहित चौरासी एवं सेवकवाणी (मूल) मूल्य ७.००

६. श्रीहित चौरासी (व्याख्या सहित)
व्याख्याकार— श्रीललिताचरण गोस्वामी मूल्य २०.००

७. श्रीराधावल्लभीय किंवा श्रीवृन्दावन
[रसरीत का मनोवैज्ञानिक परिचय]
श्रीललिताचरण गोस्वामी मूल्य ४.००

८. श्रीराधारससुधानिधि–श्रीहित हरिवंश गोस्वामी रचि
व्याख्याकार–श्रीललिताचरण गोस्वामी, सटीक मूल्य १०.००

९. श्रीसेवकवाणी (तृतीय संस्करण) मूल्य १२.००
व्याख्याकार—श्रीललिताचरण गोस्वामी,